SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 02

- Unit – II : Topic
  - A. भारतीय रंगमंच : उद्भव एवं विकास.

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

भारतीय रंगमंच : उद्‌भव एवं विकास

रंगमंच की वैदिकपूर्व परंपरा का एक और साक्ष्य हमं रूद्र या शिव उपासना से प्राप्त होता है। शिव उपासना ने भारतीय रंगमंच के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अधिकांश विद्वानों का यह मत है कि शिव की उपस्थिति आर्यों के आगमन से पूर्व भीमबेतका से प्राप्त नटराज नृतक के शैलचित्र में दिखाई देती है। हड़प्पा सभ्यता से भी पशुपति शिव के साक्ष्य मिले हैं। लिंग नृत्य तथा लिंग प्रतीक के रूप में शिव की पूजा भी इस बात का संकेत देती है कि इनका संबंध पूर्ववैदिक काल से है। शिव को महान नृतक तथा महाशैलुशा अथवा महान अभिनेता भी कहा जाता है। नाट्यशास्त्र के प्रथम पाठ में भरत शिव के नृत्य का वर्णन करते हैं जो रस, भाव, संवेदनाओं तथा क्रियाओं से परिपूर्ण है।

यक्ष उपासना परंपरा पशुपति शिव उपासना से भी पूर्व की मानी जाती है। आदिम जातियॉ प्राचीन काल से इन शक्तिशाली प्रकृति देवताओं की उपासना में इन्हें मांस, शराब, इत्र, फूल, संगीत तथा नृत्य समर्पित करती थी। उपासना की यह प्रकृति आर्यों से काफी अलग है। यक्षों की चर्चा वैदिक, बौद्ध, जैन साहित्यों में की गई है।

बाह्य संस्कृति एवं सभ्यता का भारतीय प्रस्तुति कला के विकास में योगदान एक विवाद का विषय है। यूनानी लेखकों ने ही सर्वप्रथम इस मान्यता की नींव रखी कि भारत में रंगमंच का विकास यूनानी प्रभाव में हुआ। मेगास्थनिज जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में 302–288 ई.पू. के बीच भारत आया, लिखता है कि रंगमंच के देवता डायोनाईसस ने ही प्रस्तुति कला के विज्ञान को भारत पहुॅचाया। इस मिथक की अनेक यूनानी लेखकों

की रचनाओं में पुनरावृत्ति होती है। प्राच्यविद् मैक्स वेबर तथा ई. विंडीस्च ने भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाया। 8वीं ई. पू. के महान कवि होमर ने डायोनाईसस की चर्चा तो की है परन्तु वह उनके भारतीय संबंध के विषय पर मूक है। ऐसाइलस जो यूनानी परंपरा के प्रारंभिक नाटककारों में से एक है, प्रथम बार अपने (492 BC) नाटक 'दि सप्लिऐंट' में भारत की चर्चा करता है। परंतु यह डायोनाईसस के मिथक की चर्चा नहीं करता है। डायोनाईसस के भारत आक्रमण एवं विजय के मिथक की चर्चा एक अन्य नाटककार यूरिपिड्स के नाटक 'दि बच्चे' में मिलती है। 326 ई. पू. सिकंदर महान के शिविर में झेलम नदी के तट पर प्रथम बार एगेन नामक एक व्यंग नाटक का मंचन होता है, शायद भारत की धरती पर मंचित यह प्रथम यूनानी नाटक था। रंगमंच यूनानी सैन्य शिविर परंपरा में एक प्रमुख मनोरंजन का साधन था। यूनानी नियंत्रित भारतीय क्षेत्रों में भी इसी तरह के अनेक रंगमंच की प्रस्तुति का उल्लेख हमें अनेक संदर्भों से प्राप्त होता है। इसी संदर्भ में भारतीय डायोनाईसस तथा हरकलिस की पहचान शिव एवं कृष्ण के रूप में विद्वानों द्वारा की गई। शिव का मद्यपानोत्सव अनुष्ठान हमें डायोनाईसस की याद दिलाता है। विद्वान टी.आर. ग्लोवर का यह मानना है कि डायोनिसस एक भारतीय देवता है और इनका संबंध छोटानागपुर तथा उड़ीसा के आदिवासीय क्षेत्रों की मुंडा जनजाति से है।

नाट्यशास्त्र, नाटक की उत्पत्ति और वेदों से इसके गहरे संबंध पर बल देता है। नाट्यशास्त्र के अनुसार देवताओं के आग्रह पर ऋग्वेद से पाठ्यतत्त्व, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ग्रहण कर पॉचवें वेद नाट्यवेद का सृजन किया गया। वास्तुशिल्पी देव

विश्वकर्मा को प्रेक्षागृह (रंगमंच) के निर्माण की आज्ञा दी गई। ए.बी. कीथ का यह मानना है कि नाटक की दैविक अवधारणा भारतीय प्रवृत्ति के कारण हो सकती है जो इसे प्रामाणिकता और मान्यता प्रदान के लिए दी गई है। इसके अनुसार वैदिक साहित्य में नाटक का अभाव था, इसी कारण देवताओं को नाटक रूपी नवीन साहित्य के लिए ब्रह्मा से प्रार्थना करनी पड़ी। पर वे मानते हैं कि ऋग्वैदिक काल में नाटकीय प्रदर्शनों की जानकारी थी जिनका स्वरूप धार्मिक था। ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त पाए जाते हैं जिसमें प्रत्यक्ष संवाद (संलाप) है और इन्हें प्रारंभिक भारतीय नाट्य परंपरा के रूप में स्पष्ट रूप से स्वीकारा जाता है। ऋग्वेद में पंद्रह (15) सूक्त ऐसे हैं जो निर्विवादित रूप से संवाद वाले हैं और इनका विशेष महत्त्व है, जैसे – यम–यमी संवाद, पुरूरवा–उर्वशी संवाद, अगस्त–लोपामुद्रा संवाद, इंद्र–वसुक्र संवाद, इंद्र–अदिति–कामदेव संचाद, इंद्र–इंद्राणी–वृषााकपि संवाद इत्यादि। ऋग्वेद के संवादात्मक सूक्त अन्य वेदों में दिखाई नहीं देते हैं। अथर्ववेद के केवल एक सूक्त में संवाद है।

वैदिक कर्मकांडों में नाटक के बीच अंतर्निहित थे। कर्मकांडों में केवल गीतों में मंत्र या देवताओं का स्तुतिपाठ ही नहीं बल्कि कुछ नाटकीय प्रदर्शन के तत्व भी विद्यमान हैं। अथर्ववेद में प्रत्येक प्रकार के व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों का वर्णन मिलता है। 'नट्' शब्द की उपस्थिति भी दिखाई देती है। 'शैलूष' शब्द को बाद में अभिनेता के लिए प्रयोग किया गया है। वैदिक साहित्यों में पेशेवर प्रस्तुतिकर्ता जैसे मगध, शैलूषा तथा सुत्त जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनका अर्थ गायक या अभिनेता होता था। भारतीय नाट्यकला में नाटक के साथ नृत्य का

घनिष्ठ संबंध है। शिव तथा विष्णु–कृष्ण की उपासना इसका महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसी कारण कुछ विद्वानों का यह मानना है कि नाटक का उद्‌भव धार्मिक नृत्य से हुआ है।

पाणिनि ने शिलालिन और कृशाश्व द्वारा रचित बताए जाने वाले नट्‌सूत्रों का, जो नटों के लिए, रचित पुस्तकें हैं, उल्लेख किया है। पाणिनि का समय चौथी ई.पू. है। 140 ई.पू. पतंजलि कृत महाभाष्य में भी नाटक के अस्तित्व के संबंध में अधिक सार्थक प्रमाण मिलता है। महाभाष्य में हमें ऐसे साक्ष्य मिलते हैं जिसमें नाटक के सभी तत्व विद्यमान थे। नाटकों का अर्थ के साथ घनिष्ठ संबंध प्राचीन काल से ही दिखाई देता है।

विद्वानों का यह मानना है कि आरंभ से ही नाटक की रचना में कम से कम संस्कृति का प्रयोग किया गया था तथा यह भी संभावना है कि इसकी रचना अंशतः प्राकृत से भी हुई हो। भास ने शौरसेनी के अतिरिक्त दो प्रकार की मागधी का प्रयोग किया जिसे अर्द्धमागधी कहा जा सकता है। अश्वघोष ने तीन बोलियों को प्रयोग किया है। नाटक में भाग लेने वाले निचली श्रेणी के लोगों के लिए जनपदीय भाषा की आवश्यकता जान पड़ी होगी। अश्वघोष के नाटक के खंडित अंशों की प्राप्ति से नाटक के उद्‌ीाव को, यदि पतंजलि के समय तक नही ंतो पंतजलि के समय के नजदीक (पहली सदी ई. पू.) ले जाने में सहायता मिलती है।

दामोदर धर्मानंद कोसांबी नाट्‌य (नाटक) का उद्‌गम आदिम पूजा–अनुष्ठानों में मानते हैं। इसके लिए वे ऋग्वेद प्रकरण की उर्वशी और पुरूरवा की कथा का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि ऋग्वेद में यह

कथा अभिनीत संवाद रूप में है जो उस आदिम प्रथा का नाट्य रूप है जिसमें किसी अप्सरा के साथ पवित्र आनुष्ठानिक विवाह रचने के बाद प्रजनन संबंधी अनुष्ठान में उस विवाहित पुरूष की बलि दे दी जाती थी। वैदिक पुरूरवा मुक्ति के लिए खूब अनुनय–विनय करता, पर उर्वशी उसकी याचना को शांतिभाव से ठुकरा देती है। इस नाट्य कथा ने धीरे–धीरे बदलते विरही प्रेमियों के प्रेमाख्यान का रूप से लिया। गायन व नृत्य आदिम प्रजनन संबंधी अनुष्ठानों की भांति, संस्कृत नाटक के आवश्यक अंग हैं। इनके अनुसार भारतीय रंगमंच–अभिनय का उद्‌गम रहस्य आनुष्ठानिक (धार्मिक) नाटकों से हुआ। गद्य संवाद के रूप में दिए गए श्लोकों को, गीत नाट्य की भांति सदैव वाद्य संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता था। नाटक शब्द का अर्थ भी स्वांग रचना है। सामान्यतः नाटक रात–भर चलते थे, परंतु कुछ रंगमंच गुफाओं का उपयोग दिन के उजाले में किया जाता था। रंगमंच आधारित मनोरंजन दर्शकों को आकर्षित करता था परंतु अधिकांश नाटकों की रचना संस्कृति में की गई थी। रंगमंच पर नाटाकें के प्रमुख पुरूष पात्र संस्कृत बोलते थे। स्त्री पात्र एवं सेवक ही केवल प्राकृत बोलते थे। नौवीं सदी के नाटककार राजशेखर ने गौण पात्रों के संवाद पहले संस्कृत में लिखे, फिर निर्धारित नियमों के अनुसार उनका प्राकृत में अनुवाद किया। गीतों की अनिवार्यता के कारण नाटककारों का कवि होना अनिवार्य था।

संस्कृत नाटकों ने देशी/लोक नाटकों को कभी विस्थापित नहीं किया तथा रंगमंच बौद्ध धर्म का भी अभिन्न हिस्सा था। बौद्ध विहारों द्वारा नाटक प्रस्तुत किया जाता था। प्राप्त खंडित हस्तलिपियों तथा चीन या

तिब्बत से प्राप्त भारतीयों के वृत्तांत काफी महत्त्वपूर्ण है। 300 से 700 ई. का काल भारतीय रंगमंच के लिए काफी महत्त्वपूर्ण था। इसी दौरान शास्त्रीय संस्कृत नाटक तथा रंगमंच की उत्पत्ति और विकास हुआ। नाटक के आधार ग्रंथ नाट्यशास्त्र को कई विद्वान इसी काल की रचना मानते हैं। कालिदास एक असाधारण नाटककार थे। इनके अभिज्ञान शाकुंतलम् को संस्कृत नाटक की सर्वोत्तम कृति माना जाता है। कालिदास के बाद संस्कृत में नाटक रचना का विस्फोट हुआ। नाटक मुख्य रूप से रूमानी व सुखांत बना रहा, दुखांत विषयों को दूर रखा गया क्योंकि रंगमंच का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन था। शूद्रक–कृत मृच्छकटिकम् में शहरी जीवन की झांकी मिलती है। विशाखदत्त के मुद्राराक्षस तथा देवीचन्द्रगुप्तम राजनीतिक विषय से प्रेरित नाटक हैं।

संदर्भ– सूची

1. एम.एल. वरदपांडे, हिस्ट्री ऑफ इंडियन थियेटर, अभिनव पब्लिकेशन, दिल्ली, 1987

2. एम.एल. वरदपांडे, हिस्ट्री ऑफ इंडियन थियेटर, क्लासिकल थियेटर, अभिनव पब्लिकेशन, दिल्ली, 2005